# परमात्मा – ५

सर्वव्यापक परमात्मा सूक्ष्मातिसूक्ष्म होने से निराकार है! अतः मानव के नेत्र गोलक का विषय हो ही नहीं सकता। हम बहुत से ऐसे पदार्थों को मानते हैं जो हमें दिखाई नहीं देते। इस सृष्टि के सुन्दर स्वरों को कविरत्न प्रकाश जी ने सुनकर शब्दों में कितना सुन्दर ढाला हैः –

विविध रंगाों के फूल लगते फबीले कैसे
अलबेली प्रकृति नटी की हरी साड़ी के।
ज्ञान–चक्षु खोल प्रभु–रचना अपार लखो
है न यह कौतुक अचेतन अनाड़ी के।।
बिना घड़ीसाज के न बनती प्रकाश घड़ी
चालक बिना न चलते हैं चक्र गाड़ी के।
बिना बीज वृक्ष, बिना तिली कब तेल होता
है न विश्व–खेल बिना चतुर खिलाड़ी के।।

क्या कार्य को देखकर कर्त्ता का अनुमान नहीं होता? क्यों हम उसे शरीरधारी के रूप में देखना चाहते हैं! बिना शरीर के वायु विराट सागर को आलोड़ित करती है। बिना शरीर के अग्नि सूर्य से हम तक पहुॅच रही है। बिना शरीर के संगीत हमारे मन को झंकृत करता हैं। बिना दृष्टि में आये सुगन्धि हमे आनन्दित और दुर्गन्ध विचलित करती है। इनमें से किसी के भी साकार होने की कामना मानव नहीं करता। अलंकरण और उपमा का सहारा लेकर कवि जड़ प्रकृति का मानवीयकरण कर दिया करते हैं। किन्तु मॉ भारती स्त्री रूप सामने नहीं आयेगी। भले ही उसकी मूर्ति बनाकर स्थापित कर दी। चार फूल और एक अगरबत्ती में देश सेवा! ऐसे ही जड़बुद्धि, स्वार्थी पुरूषार्थहीनों की कल्पना है परमेश्वर का साकार रूप!!! भारतमाता और गायत्री की मूर्तियॉ मेरे सामने बनी है। और अपनी जड़ता पर अड़े रहने के लिए ऐसे लोग निकट भविष्य में गुलाब, चम्पा आदि सुगन्धियों की मूर्तियॉ बनाकर कमाई आरम्भ कर दे तो आश्चर्य नहीं होगा!
परमात्मा तो निर्लेप है, निरपेक्ष है। किन्तु समाज विकृत होता है।

अपूज्याः यत्र पूज्यन्ते, पूज्यानां तु व्यतिक्रमः।
त्रीणि तत्र वर्तन्ते, दुर्भिक्षम् मरणम् भयम्।।

मेरे सभी स्वजन भ्रम को भगाकर ब्रह्म की पूजा, उपासना करे!!!